॥ आरती हनुमान जी की ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी॥ टेर ॥
जाके बल से गिरिवर काँपै, रोग-दोष जाके निकट न झांकै॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट, समुद्र-सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्च्छित परे सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे, अहिरावन की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुरदल मारे, दाहिनी भुजा सन्तजन तारे॥
सुरनर मुनि आरती उतारे, जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजनी माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै॥
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई।
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी।

www.indianfestivalslive.com